विद्या भारती प्रदीपिका

पौष से फाल्गुन, विक्रमी संवत् 2079, युगाब्द 5124

जनवरी से मार्च 2023 वर्ष 43 अंक 2 मूल्यः ₹35/–

आध्यात्मिक जीवनधारा, संगठन शास्त्र के कुशल पुरोधा भाऊराव देवरस, प्राण तत्त्व, सांख्य दर्शन

In Achieving aim of Swaraj @ 75, Global Recession

Scanned with CamScanner

सत्य का आग्रह चाहिए, यदि सत्य का आग्रह नहीं है तो मन से आत्मविश्वास के साथ खड़ा नहीं हो सकता। शिक्षकों के जीवन में इतने प्रकार के गुणों को हम किस प्रकार ला सकते हैं, यह मुख्य मुद्दा है। इस दर्शन को इन अध्यापकों के जीवन में लाना है। ध्यान में आता है कि जब वे पढ़ाते हैं तो केवल विज्ञान नहीं पढ़ाते, केवल कला नहीं पढ़ाते, केवल व्याकरण नहीं पढ़ाते, साक्षात् एक संस्कार देते हैं, एक विचार देते हैं, एक दर्शन देते हैं, एक परिपूर्ण मानव की रचना होती है। शिक्षक कष्ट भी सहता है, लेकिन अपने विद्यार्थियों के हित को छोड़ता नहीं। अपमान होने के बाद भी अपने विद्यार्थी के हित की उपेक्षा नहीं करता।

भगिनी निवेदिता ने एक विद्यालय प्रारम्भ किया। बालिकाओं का विद्यालय, स्वामी विवेकानन्द ने कहा था शुरू करो, शुरू किया, अभी पन्द्रह बीस बच्चियाँ आ गईं। लेकिन पैसा कहाँ से आए? चर्चा हो गई शुरू कि एक अंग्रेज मेम आयी है। जो भारतीय बच्चियों को बिगाड़ती है, विदेशी शिक्षा देती है। ये गलत धारणा लोगों के मन में आ गई। एक परिवार में गईं। उन्होंने कहा ऐसे विद्यालय चलाती हूँ। छोटी-छोटी बच्चियों को पढ़ाती हूँ । आप कुछ सहायता कर सकते हैं? एक सेठ जी पैसे वाले थे। उनको इतना गुस्सा आ गया कि जोर से थप्पड़ मारा भगिनी निवेदिता के गाल पर। निकल जाओ यहाँ से, लेकिन भगिनी निवेदिता गई नहीं, चुपचाप खड़ी रहीं। अब उस व्यक्ति को लगा कि ज्यादा हो गया। यह मुझे नहीं करना चाहिए था। चुपचाप बैठ गए, वे भी बैठ गईं दो चार मिनट ऐसे ही बीत गए, कोई कुछ बोला ही नहीं। धीरे से भगिनी निवेदिता बोली, 'मैंने जो भी गलती की उसका फल पाया लेकिन मेरी बच्चियों ने तो कोई गलती नहीं की, उनके लिए कुछ तो दे दीजिए आप।' यह हिम्मत का काम है। यह छोटा काम नहीं है। आगे चलकर उसी व्यक्ति ने पूरा विद्यालय खड़ा किया। लेकिन इतनी हिम्मत तो चाहिए अपनी बच्चियों के लिए, जिनको बच्ची मान रही थीं, उनके लिए थप्पड़ खाकर भी, बैठकर पैसा माँग कर लाना। यह सब मन के एक संकल्प से प्रकट होता है। बच्चों के लिए कमिटमेंट कैसा है? बच्चों के लिए, अपने ध्येय के लिए, उद्देश्य के लिए समर्पण कैसा है?, सावित्री बाई फुले निरक्षर महिला धीरे - धीरे पढ़ीं; महात्मा फुले ने पढ़ाया। पढ़ने जाती थीं। लोग गाली देते हैं, फिर जाती हैं। पढ़ीं और सफल हो गईं। आज सावित्री बाई फुले को लोग जानते हैं क्योंकि वे उस अपमान को सहकर आगे आईं।

- डॉ. कृष्ण गोपाल जी, अनुभूति से

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्रीराम आरावकर के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020 (प्रेस) से मुद्रित एवं झंडा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित।
सम्पादक–डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

Scanned with CamScanner